मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
**www.mazdoormorcha.com**

**Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97**

अदालतों में तारीख पर तारीख
पुलिस कमिश्नरों की नाक के नीचे चलता रहा जुआ — 3

शर्म! शर्म!! शर्म!!!
लव जेहाद के नाम पर आम जनता का ध्यान भटकाना — 5

उनका गणतंत्र, उनका अतिथि
मिथकशास्त्र, विज्ञान और समाज — 6

भारत सरकार ने कसम खाई नाश करेगी ई एस आई
हरियाणा सरकार ई एस आई सी मेडिकल कॉलेज लेने को तैयार — 8

वर्ष 28 अंक 7 फरीदाबाद, सोमवार, 16-28 फरवरी 2015 फोन : - 9999595632 2 ₹

## प्रधानमंत्री से परिधान मन्त्री तक का सफ़र

# दिल्ली चुनाव ने मोदी को जल्दी नंगा कर दिया

**नरेन्द्र मोदी को देर-सबेर नंगा तो होना ही था। पर यह काम इतना जल्दी हो जायेगा यह किसी ने सोचा न था। दिल्ली विधानसभा चुनाव में 'आप' की अभूतपूर्व जीत के चलते मोदी-शाह की जोड़ी और उसके सिपहसालारों के लिये मुंह क्या शरीर छिपाना भी मुश्किल हो रहा है। कार्पोरेट परस्ती और हिन्दुत्व के घाल-मेल से न जनता का विश्वास उन पर कायम रह सका और न ही केजरीवाल टीम की जनपरस्ती की राजनीति को आगे बढने से रोका जा सका। दरअसल भाजपा और संघ ने देश की जनता को अपनी जेब में रखे रहने का जो भ्रम पाला हुआ था, वह इस कदर टुटा है कि अब उनमें आपसी सिरफुटौवल का दौर खुले में आ गया है।**

**मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो**

प्रधानमंत्री बनते ही मोदी ने आम जनता से अपनी दूरी बनाये रखने की कवायद में स्वयं को एक तरह से परिधान मन्त्री बना लिया। उनके कुर्ते और जैकेट बेहद मंहगे और तड़क-भड़क वाले होते चले गये। यहां तक कि 26 जनवरी के अवसर पर अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के भारत दौरे में मोदी का दस लाख का सूट ही छाया रहा। ऐसे परिधान मन्त्री को जनता ने भी नंगा करने में देर नहीं लगाई। जो पहला मौका दिल्ली विधानसभा चुनाव के रूप में उसके हाथ लगा, वह ज़रा नहीं चूकी।

अपने अन्तिम चुनावी भाषण में मोदी ने स्वयं को देश की जनता के लिये 'नसीबवाला' बताते हुए बाकी सभी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को 'बदनसीब' करार दिया था। सत्ता के नशे में मोदी को यह भी याद नहीं रहा कि नेताओं का नसीब जनता लिखती है।

आज भाजपाई प्रवक्ताओं के मुंह से वही तर्क सुनने को मिल रहे हैं जो गत लोकसभा चुनाव में पिटने के बाद कांगेस की ओर से दिये जा रहे थे। बजाय अपनी जनविरोधी नीतियों और हिमालय से भी ऊंचे अहंकार को लेकर प्रायश्चित करने के, मोदी के गुर्गों का सारा ज़ोर इस बात पर है कि केजरीवाल और उनकी टीम ने जो बढ-चढ कर चुनावी वायदे किये हैं उन्हें वे पूरा नहीं कर सकते। ज़ाहिर है मोदी की टीम केजरीवाल को भी अपने मोदी जैसा ही समझती है। यानी बढ़-चढ़ कर जुमलेबाज़ी करो और चुनाव के बाद साफ़ मुकर जाओ।

मोदी के चेले-चपाटे यह दोहराते भी नहीं थक रहे कि दिल्ली के चुनाव परिणाम मोदी के विरुद्ध जनमत नहीं कहे जा सकते। हालांकि उनका असली डर यही है कि ये एकतरफ़ा नतीज़ों ने उनकी पार्टी को भारतीय जनता पार्टी से भारतीय जुमला पार्टी के रूप में स्थापित कर दिया है। मोदी ने इसी दिल्ली चुनाव में एक भाषण में कहा था कि जो देश सोचता है वही दिल्ली सोचती है। इस लिहाज से भी भाजपा को सोचने के लिये काफ़ी मसाला मिल चुका है

दिल्ली चुनाव का सबसे बड़ा सबक यही है कि जनता को जहां भी अपने हित का विकल्प नज़र आयेगा, वह मोदी को उसी तरह नकारती जायेगी जैसे कांग्रेस को नकारा था। दरअसल भाजपा और कांग्रेस में कोई फ़र्क भी नहीं है। दोनो ही कार्पोरेट हितों की पोशक हैं और स्वयं को जनता की आंखों में धूल झोंकने की महारतवाला समझती आई हैं। यदि केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली में जनपरस्ती की राजनीति फल-फूल सकी तो ऐसे विकल्पों के प्रति जनता का विश्वास मजबूत होते जाना तय है। इसका सीधा नतीजा होगा मोदी और भाजपा का राजनीतिक पहल से ओझल होते जाना।

असली चुनौती यही है। थैलीशाह और हिन्दुत्ववादी शक्तियां इतनी आसानी से सत्ता छोड़ने वाली नहीं हैं। देश की जनता ने पहले भी जयप्रकाश नारायण, विश्वनाथ प्रताप सिंह जैसों के दौर में एक ईमानदार राजनीति के विकल्प में अपना विश्वास व्यक्त किया था। पर उसे तत्कालीन नेताओं के विश्वासघात से निराशा ही हाथ लगी। अब केजरीवाल दौर में एक बार फ़िर परीक्षण की वही घड़ी आ पहुंची है। जनता ने अपना काम कर दिया है, सवाल है क्या उसे उसके मतलब का राजनीतिक नेतृत्व मिल पायेगा?

दिल्ली में परिधान मन्त्री को नंगा करना बेशक कठिन रहा, पर जनता को सम्मानित जीवन का परिधान पहनाना एक पूरी तरह नयी राजनीति की मांग करता है। विशाल जनसमर्थन की ऊर्जा 'आप' सरकार को इस दिशा में ले तो जायेगी, फ़िर भी मुहिम पटरी से न उतरे ऐसी व्यवस्था को अमलीजामा पहनाने का काम पार्टी को ही सिरे चढ़ाना है। क्या पार्टी स्वयं को इस अनुरूप ढाल पायेगी? पूरी तरह लोकतांत्रिक और पारदर्शी बनकर, हर तरह जनता के प्रति जवाबदेह होकर!

## 'चार पैदा करो' कहने वाले तीन पर ही अटक गये

भाजपा की भगवा ब्रिगेड को दिल्ली में मतदाता ने मुंहतोड़ जवाब दिया है। चुनाव प्रचार के दौरान इस ब्रिगेड के तमाम भोपुओं ने दिल्ली की जनता को साम्प्रदायिक आधार पर बांटने के लिये तरह-तरह के हथकंडे अपनाये जो पूरी तरह फ़ेल सिद्ध हुए। 70 में से 67 सीटें पाने का मतलब है कि हर समुदाय ने 'आप' के पक्ष में मत दिया और भाजपा को नकारा।

भगवा ब्रिगेड ने हिन्दुओं को भड़काने के लिये बार-बार एक बड़े झूठ का सहारा लिया कि मुसलमानों की आबादी बढ रही है और इससे हिन्दुओं के अल्पसंख्यक हो जाने का ख़तरा मंडरा रहा है। इसी क्रम में हिन्दू मतदाताओं को उत्तेजित करने के लिए राग अलापा गया कि हर हिन्दू स्त्री कम से कम चार बच्चे पैदा करे। महिलाओं को बच्चे पैदा करने की मशीन के रूप में देखने वाले इन भगवा वेशधारी लम्पटों को सपने में भी गुमान नहीं रहा होगा कि भाजपा अंतत: मात्र तीन सीटों में ही सिमट कर रह जायेगी। इतना तो तय है कि हिन्दू स्त्रियों ने तो भाजपा को बिल्कुल भी वोट नहीं दिये होगे।

कायदे से तो स्त्रियों का अपमान व उनके स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाले इस फ़र्मान को क़ानूनी परिणति तक ले जाया जाना चाहिये था। यानी भगवा ब्रिगेड को जेलों में डाल कर उन पर आपराधिक मुकदमा चलना चाहिये था। साथ ही निर्वाचन आयोग को भी संज्ञान लेते हुए इन लम्पटों को निर्वाचित पदों से मुक्त करने की कार्यवाही करनी चाहिये थी। पर अभी भारतीय तंत्र में इतनी जागरूकता नहीं आ पाई है। तो भी जनता ने अपने स्तर पर माकूल जवाब दे ही दिया।

मतदान से ऐन पहले भाजपा ने हरियाणा के एक और हत्यारे-बलात्कारी बाबा राम रहीम से भी अपने पक्ष में अपील जारी कराई। दूसरी तरफ 'आप' ने जामा मस्जिद के इमाम बुखारी का साम्प्रदायिक बुखार उतार दिया और उसकी समर्थन की पेशकश पर लात मार कर स्वयं को सभी भारतीयों की पार्टी के रूप में सामने किया। दिल्लीवासियों ने तभी 'आप' को स्वीकारा।

**ख़बर दार**

## ई एस आई अस्पतालों में मज़दूरों की आपराधिक दुर्गति

ग़रीब आदमी की दुर्गति तो प्रत्येक सरकारी अस्पताल में मुफ़्त इलाज के नाम पर होती ही है। लेकिन ई एस आई निगम, जो मुफ़्त इलाज नहीं करता और मज़दूरों के वेतन का साढे 6 प्रतिशत वसूलता है चाहे कोई इलाज कराये या न कराये, उसके अस्पतालों में जब दुर्गति होती है तो दर्द कुछ ज़्यादा ही बढ़ जाता है।

इसका एक उदाहरण 12 फ़रवरी को एन एच-3 अस्पताल में देखने को मिला। सेक्टर 55, राजीव कालोनी की साधू फ़ोर्जिंग नामक कंपनी का एक मज़दूर सौरभ कुमार आई पी नम्बर 1321420336 दिनांक 2 फ़रवरी को कान की तकलीफ़ ठीक कराने को यहां भर्ती किया गया। अगले दिन यानी 3 फ़रवरी को उसके कान का ऑपरेशन होना था। इस लिये 2 तारीख को आई.वी. कैनुला उसकी बाजू में लगाया गया। यह एक प्रकार की सुई होती है जिसके जरिये ग्लूकोज़ अथवा दवाइयां इंजेक्ट की जाती हैं और मरीज़ को बार-बार सूई नहीं चुभानी पड़ती। दिनांक 2-3 की रात में उस कैनुला से सौरभ का खून बहना शुरू हो गया। जब तक उसे पता चला काफ़ी खून बह चुका था। रात में कोई संभालने वाला ढूंढे से भी नहीं मिला। मिला तो एक वार्ड ब्वाय, भूदेव। उसे जितना ज्ञान था उसके अनुसार उसने कैनुला का

ईएसआई का मारा मजदूर बेचारा

ढक्कन अच्छी तरह से बन्द कर दिया। लेकिन क्योंकि ढक्कन ही खराब था, इसलिये सारी रात खून बहता रहा। करीब डेढ यूनिट खून बह गया। सारी चादर खून से भीग गयी। कोई पूछने या देखने वाला नहीं।

3 तारीख को ऑपरेशन नहीं हो सका क्योंकि मरीज़ ज़्यादा रहे होंगे या फ़िर इस ऑपरेशन के लिये गुड़गांव से उधारी माइक्रोस्कोपिक मशीन नहीं आई होगी। लिहाजा आप्रेशन 6 तारीख को शुरू किया गया। विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर डॉक्टर श्रुति यह आप्रेशन बड़ी तन्मयता से कर रही थीं। लगभग आधे से ज़्यादा काम हो भी गया था कि बिजली चली गयी। डॉ. श्रुति ने अस्पताल के अधिकारियों को तुरन्त फ़ोन कर सूचित किया। जवाब में केवल सॉरी सुनने को मिला और सलाह दी गयी कि कुछ देर इन्तज़ार कर लो, बिजली नहीं आये तो मरीज़ को सॉरी बोल दो। ऐसे में सर्जन खून का घूट पीने के अलावा क्या कर सकता है? करीब दो-ढाई घंटे तक इन्तज़ार के बाद अधूरे आप्रेशन को बन्द कर दिया गया। दोबारा इसे नये सिरे से 10 तारीख को किया गया। तब से लेकर अभी तक सौरभ अस्पताल में ही पड़ा है।

मुलाकात के दौरान सौरभ ने बताया कि रात को एक कुत्ता भी उसकी चारपाई के सिरहाने आकर सो जाता है जिसे आंख खुलने पर भगाया जाता है। शौचालयों का बुरा हाल है तथा मच्छर जम कर तंग करने लगे हैं। खाने का इन्तज़ाम भी सन्तोषजनक नहीं है। डॉक्टर तो अच्छे हैं लेकिन वे केवल डॉक्टरी ही तो कर सकते हैं, नर्सिंग तो नहीं कर सकते, बिजली तो नहीं ला सकते। कुत्ते तो नहीं भगा सकते। जबकि पचास गार्ड अस्पताल में रखे हुये हैं जो केवल मरीजों पर दादागिरी करते हैं।

संदर्भवश पाठक जान लें कि इस अस्पताल में एक पुराना सा जनरेटर है जो प्राय: खराब रहता है। प्रबन्धन न तो उसे ठीक कराता है, न ही नया खरीदता है।

शेष पेज दो पर